ISSN 2454-5163

प्रकाशन तिथि : 26 जनवरी 2019, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 37, अंक 7, कुल पृष्ठ 28

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

नवनिर्मित तीन चौबीसी जिनमंदिर, हेरले, जिला – कोल्हापुर (महा.)
(पंचकल्याणक के अवसर पर)

वीतराग-विज्ञान (426)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन :	251 रुपये
वार्षिक :	25 रुपये
एक प्रति :	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी :	7200
मराठी :	2000
कन्नड़ :	1000
कुल :	**10200**

स्वभावोन्मुखता धर्म है

परम पारिणामिक भाव स्वरूप आत्मा 'कारण शुद्ध जीव' है, उसमें अनंत शक्तियाँ हैं, उसका यह वर्णन है। आत्मा की समस्त शक्तियाँ ऐसे स्वभाववाली हैं कि उनके आश्रय से निर्मलता ही प्रगट होती है। एक भी शक्ति ऐसे स्वभाव वाली नहीं है कि जिसके आश्रय से विकार हो। यदि स्वभाव के आधार से विकार होता हो तो वह दूर कैसे होगा? स्वभाव के आधार से यदि विकार होता हो, तब तो विकार स्वयं ही स्वभाव हो गया, इसलिये वह दूर हो ही नहीं सकेगा; परन्तु स्वभाव का आश्रय करने से तो विकार दूर हो जाता है, इसलिये विकार को उत्पन्न करे ऐसा कोई स्वभाव आत्मा में है ही नहीं। इसप्रकार अंतर में स्वभाव और विकार की भिन्नता का निर्णय करके स्वभावोन्मुख होने से विकार दूर हो जाता है और निर्मलता प्रगट होती है, उसका नाम धर्म है।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 495

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार ॥

वर्ष : 37 (वीर नि. संवत् - 2545) 426 अंक : 7

सुमर सदा मन...

सुमर सदा मन आतमराम ॥ टेक ॥
स्वजन कुटुम्बी जन तू पोखे, तिनको होय सदैव गुलाम।
सो तो हैं स्वारथ के साथी, अन्तकाल नहीं आवत काम ॥
सुमर सदा मन... ॥ 1 ॥
जिमि मरीचिका में मृग भटके, परत सो जब ग्रीषम घाम।
तैसे तू भवमांहि भटके, धरत न इक छिनहू विसराम ॥
सुमर सदा मन... ॥ 2 ॥
करत न ग्लानी अब भोगन में, धरत न वीतराग परिनाम।
फिर किमि नरकमाहिं दुख सहसी, जहँ सुख लेश न आठौं जाम ॥
सुमर सदा मन... ॥ 3 ॥
तातैं आकुलता अब तजिके, थिर ह्वै बैठो अपने धाम।
'भागचंद' बसि ज्ञान नगर में, तजि रागादिक ठग सब ग्राम ॥
सुमर सदा मन... ॥ 4 ॥

– कविवर पण्डित भागचंदजी

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा

सातवाँ वार्षिक महोत्सव

दिनांक 22 फरवरी से 24 फरवरी 2019 तक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुनः ताजा हो जावें, इस हेतु **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का सातवाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 22 से 24 फरवरी 2019 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

इस मंगल अवसर पर पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

सम्पादकीय

कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन

(गतांक से आगे ...)

जिनमार्ग में अभक्ति मत करना

(९६)

ईसाभावेण पुणो केई णिंदति सुन्दरं मग्गं।
तेसिं वयणं सोच्चाऽभत्तिं मा कुणह जिणमग्गे॥

(हरिगीत)

यदि कोई ईर्ष्याभाव से निन्दा करे जिनमार्ग की।
छोड़ो न भक्ती वचन सुन इस वीतरागी मार्ग की॥

यदि कोई ईर्ष्याभाव से इस सुन्दर मार्ग की निन्दा करें तो उनके वचनों को सुनकर हे भव्यों ! इस सुन्दर जिनमार्ग में अभक्ति मत करना।

इस सच्चे मार्ग में अभक्ति - अश्रद्धा करने का फल अनंत संसार है; अतः किसी के कहने मात्र से इस सुन्दर मार्ग को त्यागना बुद्धिमानी नहीं है।

यह गाथा नियमसार शास्त्र के शुद्धोपयोग अधिकार की १८६वीं गाथा है। इसमें यह सदुपदेश दिया गया है कि यह जिनमार्ग परमवीतरागी मार्ग है, सहजसुख का सहज मार्ग है, परम उपादेय मार्ग है। **यदि कोई ईर्ष्यालु व्यक्ति ईर्ष्याभाव से इस सुन्दर मार्ग की निन्दा करे तो उसके दुष्ट वचन सुनकर इस मार्ग की अभक्ति नहीं करना, इसे छोड़ मत देना।**

इस गाथा का भाव स्पष्ट करते हुए टीकाकार मुनिराज श्री पद्मप्रभमलधारिदेव लिखते हैं -

''यहाँ भव्यजीवों को शिक्षा दी है। यदि कोई मंदबुद्धि त्रिकाल निरावरण, नित्यानन्द लक्षणवाले, निर्विकल्प, निजकारणपरमात्मतत्त्व के

सम्यक् ज्ञान-श्रद्धान-अनुष्ठानरूप शुद्धरत्नत्रय से प्रतिपक्षी मिथ्यात्व कर्मोदय की सामर्थ्य से मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र परायण वर्तते हुए ईर्ष्याभाव से/मत्सरयुक्त परिणाम से; पापक्रिया से निवृत्ति जिसका लक्षण है - ऐसे भेदोपचार रत्नत्रयात्मक तथा अभेदोपचार रत्नत्रयात्मक सर्वज्ञवीतरागदेव के इस सुन्दर मार्ग की निन्दा करते हैं तो उन स्वरूप विकल लोगों के कुत्सित हेतु और खोटे उदाहरणों से युक्त कुतर्क वचनों को सुनकर **जिनेश्वर प्रणीत शुद्धरत्नत्रय मार्ग के प्रति हे भव्यजीवो! अभक्ति नहीं करना, परन्तु भक्ति करना ही कर्त्तव्य है।''**

इस जगत में ऐसे अज्ञानियों की कमी नहीं है कि जो ईर्ष्याभाव के कारण एकदम सच्चे रत्नत्रयरूप धर्म की निन्दा करते देखे जाते हैं; उनके भड़कावे में आकर, उनके मुख से इस पवित्रमार्ग की निन्दा सुनकर बिना विचार किये इस पवित्र मार्ग से च्युत नहीं हो जाना; अन्यथा तुम्हें भव-भव में भटक कर अनंत दु:ख उठाने पड़ेंगे।

सभी आत्मार्थी भाई-बहिनों को आचार्यदेव के उक्त करुणा से सने वचनों पर ध्यान देना चाहिए, उनकी शिक्षा का पूरी तरह से पालन करना चाहिए।

यह वस्तुस्वरूप की निरूपक गाथा न होकर सदुपदेश की गाथा है।

इसमें अत्यन्त करुणाभाव से सचेत किया गया है कि वीतरागी-सर्वज्ञदेव द्वारा निरूपित वीतरागी मार्ग की निन्दा करनेवाले भी इस जगत में लोग मिल जाते हैं। उनके द्वारा अकारण ही ईर्ष्याभाव से इस परम पवित्र मार्ग की निन्दा की जाती है।

हे भव्यजीवो ! उनके वचनों से भ्रमित होकर इस मार्ग के प्रति अभक्ति नहीं करना, इसे किसी कीमत पर नहीं छोड़ना।

यह करुणासागर आचार्यदेव का उपदेश है, आदेश है, वह सबकुछ है, जो आचार्यदेव द्वारा हमें प्राप्त हो सकता है।

इसे पूरी भक्ति से स्वीकार करना और जीवन में अपनाना। एकमात्र यही सार है और सब असार है।

निश्चय-व्यवहार भक्ति

(९७-९८)

मोक्खपहे अप्पाणं ठविऊण य कुणदि णिव्वुदी भत्ती।
तेण दु जीवो पावइ असहायगुणं णियप्पाणं।।
मोक्खंगयपुरिसाणं गुणभेदं जाणिऊण तेसिं पि।
जो कुणदि परमभत्तिं ववहारणयेण परिकहियं।।

(हरिगीत)

जो थाप निज को मुक्तिपथ भक्ती निवृत्ती की करें।
वे जीव निज असहाय गुण सम्पन्न आतम को वरें।।
मुक्तिगत नरश्रेष्ठ की भक्ती करें गुणभेद से।
वह परमभक्ती कही है जिनसूत्र में व्यवहार से।।

मोक्षपथ में अपने आत्मा को अच्छी तरह स्थापित करके जो व्यक्ति निवृत्ति-भक्ति करता है, **निर्वाण-भक्ति करता है, निज भगवान आत्मा की भक्ति करता है, निज भगवान आत्मा में ही अपनापन स्थापित करता है, उसे ही अपना जानता-मानता है, उसका ही ध्यान करता है; वह निश्चय से असहाय गुणवाले निजात्मा को प्राप्त करता है।**

असहाय शब्द के दो अर्थ होते हैं। **एक** तो जिसे पर की सहायता की आवश्यकता नहीं है, **वह पूर्ण समर्थ पुरुष असहाय है। दूसरा** जिसका कोई सहारा नहीं है, वह **दीन-हीन व्यक्ति असहाय है।**

यहाँ पहला अर्थ ही अभीष्ट है।

मोक्ष में गये हुए पुरुषों के गुणभेद जानकर उनकी परम भक्ति करना व्यवहारनय से भक्ति कहलाती है। मुक्ति को प्राप्त महापुरुषों का - भगवन्तों का गुणानुवाद ही व्यवहार भक्ति है।

ये गाथायें नियमसार शास्त्र के परमभक्ति अधिकार की १३६वीं और १३५वीं गाथायें हैं। इन गाथाओं में सिद्धभक्ति की निश्चय-व्यवहार स्तुति

का स्वरूप समझाया गया है।

गाथा का भाव टीकाकार मुनिराज श्रीपद्मप्रभमलधारिदेव इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''यह व्यवहारनयप्रधान सिद्धभक्ति के स्वरूप का कथन है।

जो पुराणपुरुष सम्पूर्ण कर्मों के क्षय के उपायभूत कारणपरमात्मा की अभेद-अनुपचार रत्नत्रय परिणति से भलीप्रकार आराधना करके सिद्ध हुए हैं; उनके केवलज्ञानादि शुद्ध गुणों के भेद को जानकर निर्वाण की परम्परा की हेतुभूत परमभक्ति जो आसन्नभव्य जीव करता है; उस मुमुक्षु को व्यवहारनय से निर्वाणभक्ति है।''

निश्चयभक्ति के निर्विकल्प स्वरूप को भलीभांति समझनेवाले ज्ञानी श्रावक या छठवें-सातवें गुणस्थानवर्ती मुनिराज जब शुभोपयोग के काल में सिद्ध भगवान की भक्ति-स्तुति उनके केवलज्ञानादि गुणों के आधार पर करते हैं तो उक्त **विकल्पात्मक भक्ति-स्तुति को व्यवहारभक्ति कहते हैं।**

सिद्ध भगवान के गुणों को भलीभांति जानकर उनके गुणानुवाद करने को व्यवहारभक्ति कहते हैं।

तात्पर्य यह है कि **सिद्ध भगवान का स्वरूप भलीभांति जानकर मन में उनके गुणों का चिन्तन करना, वचन से उनका गुणगान करना और काया से नमस्कारादि करना व्यवहारभक्ति है।**

निरंजन निज परमात्मा के आनन्दरूपी अमृत को पीने के लिए अभिमुख यह जीव; भेदकल्पना निरपेक्ष निरुपचार रत्नत्रयात्मक निर्विकारी मोक्षमार्ग में, अपने आत्मा को, भले प्रकार स्थापित करके; निर्वृत्ति की अर्थात् मुक्तिरूपी स्त्री के चरण कमलों की परम भक्ति करता है; उस कारण से वह भव्य जीव भक्ति गुण द्वारा, निरावरण सहज ज्ञान गुणवाला होने से, असहाय गुणात्मक निज आत्मा को प्राप्त करता है।

भक्ति दो प्रकार की होती है –

एक निश्चयभक्ति और दूसरी व्यवहारभक्ति।

चैतन्यस्वभाव के निर्विकल्प श्रद्धान-ज्ञानपूर्वक उसी में स्थिर होना, परमात्मा की निश्चयभक्ति है तथा ऐसी निश्चयभक्तिपूर्वक बीच-बीच में जो शुभराग आता है, वह व्यवहारभक्ति है।

अपने शुद्ध आत्मा का वीतरागी श्रद्धान-ज्ञान ही निश्चयभक्ति है और देव-शास्त्र-गुरु के प्रति बहुमान का भाव व्यवहारभक्ति है।

यहाँ पर्याय के अभिमुख होने के लिए नहीं कहा है; परन्तु पर्यायबुद्धि छोड़कर, पर्याय को त्रिकाली तत्त्व के अभिमुख करने के लिए कहा है।

इस गाथा और उसकी टीका में यही कहा गया है कि मोक्षमार्ग में आत्मा को स्थापित करना अर्थात् निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को धारण करना ही निश्चयभक्ति है, निर्वृत्तिभक्ति है, निर्वाणभक्ति है।

इसी निश्चय निर्वाणभक्ति-सिद्धभक्ति से निज भगवान आत्मा की प्राप्ति होती है।

जो जाणदि अरहंतं

(९९-१००)

जो जाणदि अरहंतं दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहिं।
सो जाणदि अप्पाणं मोहो खलु जादि तस्स लयं।।
सव्वे वि य अरहंता तेण विधाणेण खविदकम्मंसा।
किच्चा तथोवदेसं णिव्वादा ते णमो तेसिं।।

(हरिगीत)

द्रव्य गुण पर्याय से जो जानते अरहंत को।
वे जानते निज आतमा दृगमोह उनका नाश हो।।
सर्व ही अरहंत ने विधि नष्ट कीने जिस विधी।
सबको बताई वही विधि हो नमन उनको सब विधी।।

जो अरहंत भगवान को द्रव्यरूप से, गुणरूप से एवं पर्यायरूप से जानता है, वह अपने आत्मा को जानता है और उसका मोह नाश को प्राप्त होता है।

सभी अरहंत भगवान इसी विधि से कर्मों का क्षय करके मोक्ष को प्राप्त हुए हैं और सभी ने इसीप्रकार मोक्षमार्ग का उपदेश दिया है, उन सभी अरहंतों को मेरा नमस्कार हो।

तात्पर्य यह है कि मोह के नाश का उपाय अपने आत्मा को जानना-पहिचानना है और अपना आत्मा अरहंत भगवान के आत्मा के समान है; अतः द्रव्य-गुण-पर्याय से अरहंत भगवान का स्वरूप जानना मोह के नाश का उपाय है।

ये गाथायें प्रवचनसार ग्रन्थराज की ८०वीं एवं ८२वीं गाथायें हैं। इनमें मोह के नाश की विधि बताई है। साथ में यह भी कहा है कि **सभी अरहंत इसी विधि से मोक्ष गये हैं।**

आचार्य अमृतचन्द्र इन गाथाओं के भाव को तत्त्वप्रदीपिका टीका में इसप्रकार स्पष्ट करते हैं -

''जो अरहंत भगवान को द्रव्यरूप से, गुणरूप से और पर्यायरूप से जानता है; वह वस्तुतः अपने आत्मा को जानता है; क्योंकि दोनों में निश्चय से अन्तर नहीं है।

अरहंत का स्वरूप अन्तिम ताव को प्राप्त होनेवाले सोने के स्वरूप की भाँति, सर्वप्रकार से स्पष्ट है; इसलिए उसका ज्ञान होने पर सर्व आत्मा का ज्ञान होता है।

अन्वय द्रव्य है, अन्वय के विशेषण गुण हैं और अन्वय के व्यतिरेक (भेद) पर्यायें हैं। सर्वतः विशुद्ध भगवान अरहंत में (अरहंत के स्वरूप का ज्ञान होने पर) जीव तीनों प्रकार से युक्त (द्रव्य-गुण-पर्यायमय) अपने आत्मा को अपने मन से जान लेता है।

जैसे 'यह चेतन है' इसप्रकार का अन्वय द्रव्य है, अन्वय के आश्रित रहनेवाला 'चैतन्य' विशेषण गुण है और एक समयमात्र की मर्यादावाला कालपरिमाण होने से परस्पर अप्रवृत्त अन्वय के व्यतिरेक वे पर्यायें हैं; जो

चिद्विवर्तन की ग्रन्थियाँ (गाठें) हैं।

इसप्रकार त्रैकालिक आत्मा को भी एक काल में जान लेनेवाला यह जीव; जिसप्रकार मोतियों को झूलते हुए हार के अन्तर्गत माना जाता है; उसीप्रकार चिद्विवर्तों का चेतन में ही संक्षेपण करके तथा विशेषण-विशेष्यता की वासना का अन्तर्धान होने से जिसप्रकार सफेदी को हार में अन्तर्हित किया जाता है; उसीप्रकार **चैतन्य को चेतन में ही अन्तर्हित करके जिसप्रकार मात्र हार को जाना जाता है; उसीप्रकार केवल आत्मा को जानने पर, उसके उत्तरोत्तर क्षण में कर्ता-कर्म-क्रिया का विभाग क्षय को प्राप्त होता जाता है; इसलिए निष्क्रिय चिन्मात्रभाव को प्राप्त होता है।**

इसप्रकार मणि की भाँति जिसका निर्मल प्रकाश अकम्परूप से प्रवर्तमान है - ऐसे उस चिन्मात्र भाव को प्राप्त जीव में मोहान्धकार निराश्रयता के कारण अवश्य ही प्रलय को प्राप्त होता है।

यदि ऐसा है तो मैंने मोह की सेना को जीतने का उपाय प्राप्त कर लिया है।

अतीतकाल में क्रमशः हुए समस्त तीर्थंकर भगवान प्रकारान्तर का असंभव होने से जिसमें द्वैत संभव नहीं है; ऐसे **इसी एक प्रकार से कर्मांशों का क्षय करके स्वयं अनुभव करके परमाप्तता के कारण भविष्यकाल में अथवा इस वर्तमान काल में अन्य मुमुक्षुओं को भी इसीप्रकार उपदेश देकर मोक्ष को प्राप्त हुए हैं;** इसलिए निर्वाण का अन्य कोई मार्ग नहीं है - ऐसा निश्चित होता है अथवा अधिक प्रलाप से बस होओ ! मेरी मति व्यवस्थित हो गई है। भगवन्तों को नमस्कार हो।''

ये गाथायें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं, इनकी यह तत्त्वप्रदीपिका टीका भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि इनमें मोह के नाश का उपाय बताया गया है।

मोह दो प्रकार का होता है - १. दर्शनमोह और २. चारित्रमोह।

दर्शनमोह में मूलत: मिथ्यात्व आता है और चारित्रमोह में राग-द्वेष अर्थात् २५ कषायें आती हैं।

यहाँ पहली गाथा में मुख्यत: दर्शनमोह अर्थात् मिथ्यात्व के नाश की बात है। इस गाथा में अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि जो आत्मा को जानता है, उसका मोह (मिथ्यात्व) नाश को प्राप्त हो जाता है।

इसप्रकार यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि मिथ्यात्व के अभाव के लिए, **सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए निज भगवान आत्मा को जानना अत्यन्त आवश्यक है।**

प्रश्न – गाथा में अरहंत भगवान को जानने की बात है और आप आत्मा को जानने की बात कह रहे हैं ?

उत्तर – मोह के नाश के लिए तो आत्मा को ही जानना आवश्यक है; किन्तु आत्मा को जानने के लिए अरहंत भगवान को द्रव्य-गुण-पर्याय से जानना आवश्यक है। इसप्रकार आत्मा और परमात्मा – दोनों को ही जानना आवश्यक है।

एक बात और भी विशेष ध्यान देने योग्य है कि टीका में हेतु के रूप में कहा गया है कि आत्मा (अपना आत्मा) और परमात्मा (अरहंत-सिद्ध) में कोई अन्तर नहीं है। जब अन्तर ही नहीं है तो फिर दोनों का जानना भी एक का ही जानना हुआ न ?

वस्तुत: बात यह है कि **अरहंत भगवान की पर्याय वीतरागता और सर्वज्ञता से सम्पन्न है। उसे जानने का तात्पर्य यह हुआ कि आत्मा को जानने के लिए वीतरागता और सर्वज्ञता का स्वरूप जानना अत्यन्त आवश्यक है।**

आत्मा और परमात्मा के द्रव्य-गुण-पर्याय में द्रव्य और गुण की समानता तो निर्विवाद ही है; किन्तु पर्याय में जो अन्तर दिखाई देता है, वह वर्तमान पर्याय का है; आत्मा और परमात्मा – दोनों का त्रिकाली पर्यायस्वभाव तो समान ही है। तात्पर्य यह है कि **हम और आप सभी त्रिकाल सर्वज्ञस्वभावी ही हैं।** (क्रमश:)

छहढाला प्रवचन

अनित्य भावना

जोबन-गृह-गो-धन-नारी, हय-गय-जन आज्ञाकारी।
इन्द्रिय-भोग छिन थाई, सुरधनु चपला चपलाई॥३॥

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

श्रीमद् राजचन्द्रजी आत्मज्ञानी सत्पुरुष थे, वे अनित्य भावना में लिखते हैं कि –

विद्युत लक्ष्मी प्रभुता पतंग, आयुष ते तो जल ना तरंग।
पुरंदरी-चाप अनंग रंग, शुं राचिये ज्यों क्षणनो प्रसंग॥

देखो, सोलह वर्ष की छोटी उम्र में उन्होंने कैसी भावना भाई है। उन्होंने बारह भावना लिखी है, उसमें वे पहली अनित्य भावना में कहते हैं कि अरे ! इस संसार में लक्ष्मी तो बिजली के समान चंचल है; प्रभुता, प्रतिष्ठा आदि तो पतंग के कच्चे रंग के समान उड़ जानेवाली है तथा आयु पानी की तरंग के समान प्रतिपल घट रही है। विषय-भोग की लालसा इन्द्रधनुष के समान देखते-देखते ही नष्ट हो जानेवाली है। अरे रे ! ऐसे क्षणभंगुर प्रसंगों में क्यों रमना? जो संयोग टिकते नहीं तथा जिनमें से कभी सुख नहीं आता, ऐसे संयोगों में मोह क्या करना? देहादिक का संयोग छूट जाता है तो भी शाश्वत टिकनेवाले अपने चैतन्यतत्त्व को समझकर उसमें एकाग्र होने की भावना भाना चाहिए।

जिसप्रकार आकाश के बादलों में कोई महल बनाकर नहीं रहता है; क्योंकि लोग जानते हैं कि काफी घनघोर घटा क्षण में दिखकर दूसरे ही क्षण

विलय होकर अदृश्य हो जाती है। इसके आधार से महल नहीं बंधता है। उसीप्रकार संयोगों के बादल क्षण में अचानक इकट्ठे होते हैं और दूसरे ही क्षण में नष्ट हो जाते हैं। इनके आधार से कभी सुख का महल नहीं बनता है।

अनेक राजा आकाश में गिरते तारे को देखकर अथवा बादलों को बिखरते देखकर संसार से विरक्त हुए हैं। महाराज हनुमान ने आकाश में तारा गिरता देखकर वैराग्य प्राप्त किया। महाराज ऋषभदेव ने नीलांजना देवी की देह की क्षणभंगुरता देखकर वैराग्य प्राप्त किया।

अरविन्द नाम के राजा ने भी बादलों को बिखरते देखकर वैराग्य प्राप्त किया, उनकी कथा पुराणों में इसप्रकार आती है कि जब दुष्ट कमठ ने अपने भाई मरुभूति को मार डाला तो यह सुनकर राजा अरविन्द उदास-चित्त होकर राजमहल की छत पर बैठ गये और वैराग्य का विचार करने लगे, तभी आकाश में सुन्दर रंग-बिरंगे बादलों के इकट्ठे होने से एक सुन्दर जिनमंदिर का दृश्य बन गया। उसकी अद्भुत शोभा देखकर राजा को ऐसा विचार आया कि मैं भी अपने राज्य में ऐसा ही सुन्दर जिनमंदिर बनवाऊँगा। ऐसा विचार करके उन्होंने बादलों के मन्दिर के चित्र बनवाने की तैयारी की; परन्तु तब तक बादल बिखर गये और उस अद्भुत मंदिर की रचना अदृश्य हो गयी।

राजा यह घटना देखकर दंग रह गया। उसकी चेतना जाग गई। अरे ! ऐसा अस्थिर संसार, ऐसे क्षणभंगुर संयोग। बादलों की तरह ही राजपाट, महल, रानी, शरीर इत्यादि सभी संयोग भी असार और विनाशीक हैं। अरे, ऐसे अस्थिर इन्द्रिय-विषयों में दिन-रात मग्न रहना जीव को शोभा नहीं देता। यह शरीर क्षणभंगुर है और भोग तो दु:ख ही देनेवाले हैं। जिसे स्वयं का हित करना हो, उसे इस मोह में जीवन गंवाना योग्य नहीं है। जिसप्रकार यह बादल क्षणभर की देर किये बिना बिखर गये, उसीप्रकार

अब मैं भी एक पल भी गंवाये बिना, यह संसार छोड़कर, मुनि होकर आत्मध्यान द्वारा कर्म के बादलों को बिखेर कर नष्ट करूँगा - इसप्रकार वैराग्य भावनापूर्वक वे अरविन्द राजा राजपाट छोड़कर वन चले गये और दिगम्बर गुरु के पास दीक्षा लेकर मुनि हो गये। भगवान पार्श्वनाथ के जीव ने हाथी की पर्याय में इन्हीं मुनिराज के उपदेश से सम्यग्दर्शन प्राप्त किया।

एक मनुष्य के खेत खूब पके और तैयार खड़े थे। आलस्य के कारण उसने सोचा, अगले दिन धान उखाड़ लूँगा, तभी एकाएक बादल आये और मूसलाधार बारिश करने लगे। सारा अनाज गीला हो गया, थोड़ी देर बाद वे बादल भी बिखर गये। शरीर की ऐसी क्षणभंगुरता है। भरी जवानी में हृष्ट-पुष्ट शरीर होता है, तब तो ऐसा विचार करता है कि बुढापे में आत्महित करूँगा; परन्तु तब तक तो कालरूपी बादल आकर शरीर के रजकणों को क्षण में बिखेर देता है। इसका क्या भरोसा? उस किसान ने भी बहुत विचार किये थे कि अनाज पक गया है, इसे बेचूँगा, खाऊँगा और सुखी रहूँगा। पर संयोगों का क्या भरोसा, दूसरे ही क्षण पता नहीं क्या से क्या हो जाये? लड़का जवान होता है, तब पिता विचार करता है कि यह धन कमाने लगे तो इसकी शादी कर दूँ, जिससे बुढापे में चैन से जीवन कटेगा; परन्तु तबतक तो आयु पूरी होने पर लड़का चला जाता है। कुछ वर्षों पहले बिहार में एक करोड़पति मनुष्य, जिसके बंगला, बाग, मोटर इत्यादि वैभव का ठाठ-बाट तथा स्त्री-पुत्रादिक सभी थे, एक बार शाम को घूमने गया। घण्टे दो घण्टे घूमकर जब वह वापिस लौटकर आया तो उसे घर ही नहीं मिला। तब वह आश्चर्यचकित होकर देखता है कि सभी पदार्थ कहाँ चले गए ? बंगला, बाग-बगीचा, परिवार एक क्षण में कहाँ चले गये........कुछ भी नहीं दिखता..........क्या हुआ....क्या भूकम्प होने से सब कुछ जमीन में समा गया ? स्वयं तो अकेला रह गया, जो अकेला था वह अकेला रह गया, संयोग भिन्न ही थे, इसलिए भिन्न हो गये।

(क्रमशः)

नियमसार प्रवचन –

आचार में स्थिरता वाला प्रतिक्रमणमय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ८६ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

उम्मग्गं परिचत्ता जिणमग्गे जो दु कुणदि थिरभावं।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा।।८६।।

(हरिगीत)

छोड़कर उन्मार्ग जो जिनमार्ग में थिरता धरे।
प्रतिक्रमणमय है इसलिए प्रतिक्रमण कहते हैं उसे।।८६।।

जो जीव उन्मार्ग को छोड़कर जिनमार्ग में स्थिरभाव करता है, वह जीव ही प्रतिक्रमण कहा जाता है; क्योंकि वह प्रतिक्रमणमय है।

(गतांक से आगे....)

सम्यग्दर्शनसहित वीतरागी मुनि कैसे हैं? तो कहते हैं कि व्यवहार से २८ मूलगुणों का पालन करनेवाले हैं।

पुनः वे धर्मी जीव कैसे हैं? बुद्ध, वेदान्त आदि वस्तु का स्वरूप-एकान्त क्षणिक अथवा एकान्त कूटस्थ कहते हैं, सब मिलकर एक आत्मा कहते हैं, ईश्वर को जगत्कर्ता कहते हैं इत्यादि अनेक प्रकार से कहनेवाले मार्गाभासरूप विपरीतमार्गी हैं; धर्मी जीव उनकी श्रद्धा नहीं करता। उस धर्मी जीव की मुनिदशा कैसी होती है, वह बतलाते हैं। व्यवहार से पाँच महाव्रत का पालन करते हैं, उनके अहिंसा महाव्रत अर्थात् षट्काय के जीवों को मारने का विकल्प नहीं होता, असत्य-वचन बोलते नहीं, चोरी करते नहीं, ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं और परिग्रह में वस्त्र का टुकड़ा भी रखते नहीं, पाँच महाव्रत भली-भाँति पालते हैं, पाँच समिति का पालन करते हैं, चार हाथ जमीन देखकर चलते हैं विचार कर बोलते हैं, निर्दोष

आहार एक समय लेते हैं, पुस्तकादि रखने-उठाने में सावधानी वर्त्तते हैं, जीवरहित स्थान पर मल-मूत्रादि क्षेपण करते हैं, मनगुप्ति-वचनगुप्ति-कायगुप्ति का पालन करते हैं, स्पर्शन-रसना-घ्राण-चक्षु और कर्ण इन्द्रिय के विषयों का निरोध करते हैं तथा छह आवश्यक, सामायिक, स्तुति-वन्दन-प्रतिक्रमण-कायोत्सर्ग-प्रत्याख्यान का पालन करते हैं। अट्ठाईस मूलगुण स्वरूप-वीतराग-सर्वज्ञदेव के मार्ग में अपने परिणाम स्थिर करते हैं। (यहाँ इत्यादि में सात मूलगुण-अस्नान, खड़े-खड़े भोजन आदि समझ लेना, तीन गुप्ति भी यहाँ स्पष्टता के लिए लिखी हैं। अन्य शास्त्रों में तीन गुप्ति को अट्ठाईस मूलगुणों में नहीं लिया गया है।)

सच्चे मुनि का स्वरूप छट्ठे गुणस्थान में सविकल्पदशा में कैसा होता है, वह बतलाते हैं। सम्यग्दर्शनसहित की बात है, तदुपरांत स्वरूप की स्थिरता इतनी होती है कि शरीर को वस्त्राच्छादन करने का विकल्प भी होता नहीं। मुनि के लिए बनाया गया भोजन (उच्छिष्ट आहार) मुनि नहीं लेते, ऐसी महा वीतरागीदशा मुनि की होती है और बाह्य में शरीर की नग्नदशा होती है। यहाँ मुनि के शुभपरिणाम अर्थात् व्यवहारचारित्र की बात की है।

अब स्वरूप की अन्तरस्थिरता की बात करते हैं।

जो निश्चय से ज्ञानस्वरूप में स्थिर रहनेवाले होते हैं, वे मुनि निश्चयप्रतिक्रमण स्वरूप हैं।

शुद्धनिश्चयनय से वे सम्यग्दृष्टि जीव अपने स्वाभाविक ज्ञान-दर्शन-वीर्य आदि गुणों से सुशोभित आत्मा में स्थिरता करते हैं, तब प्रतिक्रमण कहा जाता है। कैसा है आत्मा? सामान्य दृष्टास्वभाव और विशेष ज्ञातास्वभावरूप हैं; उसमें जो स्थिरता करते हैं, उन्हें निश्चयचारित्र होता है। पहले तो सम्यग्दर्शन के उपरान्त शुभ की बात की थी; अब यहाँ शुभरहित शुद्ध की बात करते हैं। अट्ठाईस मूलगुण का पालन, वह शुभराग है; उससे रहित होकर शुद्धभाव में ठहरते हैं, उन्हें निश्चयचारित्र होता है और प्रतिक्रमण भी होता है। सम्यग्दर्शन बिना इनमें से एक भी नहीं होता।

(क्रमशः)

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

चिति शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

प्रश्न – शक्तियाँ उछलती हैं – इसमें धर्म क्या हुआ? कोई तप आदि करें तो धर्म हो न!

उत्तर – अरे भाई! तू आत्मवस्तु है या नहीं? है तो इस आत्मवस्तु का स्वभाव क्या है? चैतन्य.....चैतन्य..... चैतन्य इसका स्वभाव है न! आचार्य भगवान कहते हैं कि तेरी चैतन्यस्वभावमय वस्तु में ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य, आनन्द प्रभुता आदि अनन्तशक्तियों की/गुणों की ऋद्धि भरी है। चैतन्यस्वभावमय अनन्तगुणनिधि प्रभु आत्मद्रव्य के आश्रय में ही अनन्तगुण निर्मल-निर्मल उछलते हैं। निर्मल ज्ञान-श्रद्धान-चारित्र प्रगट होते हैं। भाई! यह निर्मल ज्ञान-श्रद्धान-आचरण का प्रगट होना धर्म नहीं तो और क्या है? भाई! इसका नाम ही तो धर्म है।

आत्मा की ज्ञान-श्रद्धान-चारित्र पर्याय आदि शक्तियाँ जब त्रिकाली द्रव्य के आश्रय से निर्मलपने परिणमती हैं, तभी यथार्थ धर्म होता है। इसके सिवाय व्रत-तप आदि कुछ भी करने से यह धर्म प्रगट नहीं होता। धर्म के दश भेद और तप के बारह भेद हैं – ये सब तो व्यवहार से धर्म कहे गये हैं। यथार्थतः तो एक वीतरागभाव होना ही धर्म है और चैतन्य का स्वरूप-विश्रान्त होकर अन्तरंग में प्रतपना ही तप है। सम्यग्ज्ञानदीपिका

में क्षुल्लक श्री धर्मदासजी ने लिखा है कि –

प्रश्न – ''जब आत्मा एक है तब फिर परीषह बाईस कहाँ से आये? जब आत्मा एक है, तब धर्म दश प्रकार का कहाँ से आया?

उत्तर – यह तो भेद-अपेक्षा किया गया कथन है, वास्तव में धर्म दश नहीं हैं, धर्म तो एक वीतरागभाव ही है। वीतराग परमेश्वर का ही ऐसा अपूर्व मार्ग है।''

अहा! ज्ञानमात्र आत्मा में 'ज्ञान है' – ऐसा कहने से ज्ञान में अस्तित्व-गुण का रूप आया। इसप्रकार अस्तित्व भिन्न सिद्ध हुआ, ज्ञान 'आनन्द स्वरूप है' ऐसा कहने से ज्ञान में आनन्दगुण का रूप आया तो आनन्दगुण भिन्न सिद्ध हुआ। **ज्ञान में 'अनन्तगुणों का रूप है' ऐसा कहने से आत्मा में अनन्तगुण सिद्ध होते हैं। इस तरह भगवान आत्मा में अनन्तगुण हैं। भगवान आत्मा विकार का गोदाम नहीं गुणों का गोदाम है; जिसमें अनन्तगुण निर्मलरूप से उछलते हैं।** पुण्य-पाप के भाव तो औपाधिकभाव हैं, वे तो पर्यायदृष्टि से कृत्रिम नये उत्पन्न हुए हैं। **पर्यायदृष्टिवंत का लक्ष जब पर्याय पर जाता है, तो विकृतदशा उत्पन्न होती है। वस्तु में ऐसी एक भी शक्ति नहीं है कि जिसमें से विकार उत्पन्न हो। परवस्तु, निमित्त, राग, विकार – इनका लक्ष्य छोड़कर त्रिकाली ध्रुव चैतन्य पिण्ड ज्ञानघन आत्मा का लक्ष्य करते ही पर्याय में निर्मलता उत्पन्न होती है – इसका नाम धर्म है।**

(क्रमशः)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : सम्यग्दर्शन और आत्मा भेदरूप हैं या अभेदरूप है ?

उत्तर : सम्यग्दर्शनादि निर्मलपर्याय और आत्मा अभेद है। राग और आत्मा में तो स्वभाव भेद है; किन्तु सम्यग्दर्शन और शुद्धात्मा अभेद है। परिणति स्वभाव में अभेद होकर परिणमित हुई है, आत्मा स्वयं अभेदपने उस परिणतिरूप से परिणमित हुआ है – उसमें भेद नहीं है। व्यवहार सम्यग्दर्शन तो विकल्परूप है, वह आत्मा के साथ अभेद नहीं है।

प्रश्न : कहीं-कहीं शुद्धपर्याय को आत्मा कहा है, उसका क्या आशय है ?

उत्तर : अलिंगग्रहण के 20 वें बोल में ध्रुव को स्पर्श नहीं करनेवाली शुद्धपर्याय को आत्मा कहा है, वहाँ वेदन की अपेक्षा कहा है; क्योंकि आनन्द का वेदन परिणति में है, त्रिकाली में वेदन नहीं होता; इसलिये जो वेदन में आया, वह मैं हूँ – ऐसा कहा है। जहाँ जैसा आशय हो, वैसा समझना चाहिए।

सम्यग्दर्शन का विषय त्रिकाली ध्रुव सामान्य है, वही सर्वतत्त्वों में सार है। वस्तु स्वयं ध्रुवरूप है, उसका लक्ष्य करने से सम्यग्दर्शन होता है।

प्रश्न : पहले ज्ञान जानने में आता है या आत्मा ? दोनों की प्रसिद्धि में कितना अन्तर है ?

उत्तर : दोनों एक साथ ही जानने में आते हैं। आत्मा को लक्ष्य में लिये बिना ज्ञान को किसका लक्षण कहना ? आत्मा को लक्ष्य में लेने पर ज्ञान उसमें अभेद हुआ, तब आत्मा उसमें लक्षित हुआ और ज्ञान उसका लक्षण हुआ; इसप्रकार लक्षण और लक्ष्य - दोनों की प्रसिद्धि एकसाथ ही है।

प्रश्न : यदि ज्ञान और आत्मा दोनों एकसाथ जानने में आते हैं तो फिर ज्ञान और आत्मा का भेद तो व्यर्थ हो गया ?

उत्तर : अभेद की ओर ढलने पर भेद को उपचार से साधन कहा जाता है। अभेद के लक्ष्य बिना अकेला भेद तो सचमुच व्यर्थ ही है। अभेद में जाते-जाते बीच में भेद आ जाता है, परन्तु उस भेदरूप व्यवहार का निषेध करके अभेद में ढलना होता है; अत: उस भेद को व्यवहार-साधन कहा जाता है। निश्चय बिना अकेला व्यवहार तो व्यर्थ ही है। प्रथम ज्ञान को जाना, पश्चात् आत्मा को जाना – ऐसा भी वास्तव में है नहीं।

जब तक यह लक्षण और यह लक्ष्य – इसप्रकार दो भेदों के ऊपर लक्ष्य रहे; तब तक विकल्प की ही प्रसिद्धि है; आत्मा की नहीं। आत्मा की ओर बढ़कर जब आत्मा की प्रसिद्धि हुई, अनुभव हुआ; तब लक्ष्य और लक्षण – ऐसे दो भेदों पर लक्ष्य नहीं रहता और दोनों अभेद होकर एकसाथ प्रसिद्ध होते हैं; भेद व्यवहार तो अभेद आत्मा का प्रतिपादन करने के लिये है।

प्रश्न : यदि आत्मस्वभाव सुख का सागर है तो वर्तमान में उस सुख का अंश भी अनुभव में क्यों नहीं आता ?

उत्तर : आत्मा सुख का सागर होने पर भी उसने अनादिकाल से राग में एकत्व बुद्धि बना रखी है; इसलिये स्वभाव से सुखांश प्रगट नहीं होता। राग के साथ एकत्व बुद्धि का धागा तोड़कर उसमें भेदज्ञान करे तो स्वभाव में से सुखांश प्रगट हो।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 24 फरवरी 2019	**जयपुर**	**वार्षिकोत्सव**
5 से 10 अप्रैल	**गुना**	**पंचकल्याणक**
19 मई से 5 जून	**सूरत**	**प्रशिक्षण शिविर**
7 जून से 7 जुलाई	**विदेश**	**तत्त्वप्रचारार्थ**
7 से 14 जून	शिकागो	
14 से 21 जून	न्यूजर्सी	
21 से 28 जून	डलास	
28 जून से 7 जुलाई	लॉस एन्जिल्स	
2 से 11 अगस्त	**जयपुर**	**महाविद्यालय शिविर**

समाचार दर्शन -

गौरझामर में पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

गौरझामर-सागर (म.प्र.) : यहाँ शौरीपुर नगरी (संस्कार आई.टी.आई. दाल मिल) में श्री 1008 शान्तिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट एवं सागर-केसली-करेली-गढाकोटा मुमुक्षु मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव बुधवार, दिनांक 19 दिसम्बर से सोमवार 24 दिसम्बर, 2018 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित निर्मलजी सागर, पण्डित सुबोधजी सिवनी आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

महोत्सव ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के मंच संचालन एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री व डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में संपन्न हुआ। बालक नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती कुसुम-महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र श्री अजयकुमारजी जैन गौरझामर, कुबेर इन्द्र श्री संजयजी जैन गौरझामर एवं यज्ञनायक श्री विनोदकुमारजी जैन गौरझामर थे। महोत्सव का ध्वजारोहण श्री सेठ सुखदयालजी राजेशजी जिनेशजी दिनेशजी डेवडिया परिवार केसली-इन्दौर ने, प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री सुनीलजी सर्राफ सागर, मंच उद्घाटन श्री इंजी. भीष्मजी संयमजी परिवार मकरोनिया सागर ने, सिंहद्वार का उद्घाटन सेठ सुदर्शनलालजी बण्डा ने, यागमण्डल विधान का उद्घाटन डॉ. शरद जैन माधुरी जैन परिवार भोपाल ने एवं प्रतिष्ठा मण्डप के जिनालय का उद्घाटन श्रीमती पुष्पा माताश्री अनूपजी हर्षुलजी वर्षा इण्डस्ट्रीज परिवार सागर ने किया।

दिनांक 21 दिसम्बर को बाल तीर्थंकर का सौधर्मादि इन्द्रों के पश्चात् सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री शुद्धात्मजी महेशजी भण्डारी भोपाल को मिला। सायंकाल मैनपुरी से आया हुआ 45 फीट का कांच से बना विशाल पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन श्रीमती प्रेमबाई जैन दीपक-मन्जू जैन समर्थ श्रेया परिवार इन्दौर ने एवं सर्वप्रथम आहारदान श्री सुधीरकुमारजी कटनी सुभाष ट्रांसपोर्ट परिवार ने किया। मूलनायक भगवान शांतिनाथ के भेंट व विराजमानकर्ता श्रीमती जीराबाई नवीनजी कविताजी परिवार इन्दौर थे। इस पंचकल्याणक में अत्यंत सुन्दर और आकर्षक 13 प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की गई।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। दिनांक 23 दिसम्बर को ज्ञानकल्याणक के दिन **दुनिया की व्यवस्था : छः सामान्य गुण** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित अभयजी शास्त्री, पण्डित राकेशजी शास्त्री, डॉ. संजीवजी गोधा एवं पण्डित मनीषजी 'कहान' के वक्तव्य का लाभ मिला। अध्यक्षता पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर एवं विशेष उद्बोधन प्रो. ए.डी. शर्मा का हुआ।

संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 1500-2000 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुंची।

महोत्सव में समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। •

जाना अमेरिका का शिविर सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दिनांक 26 दिसम्बर 2018 से 1 जनवरी 2019 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

दिनांक 27 दिसम्बर को दोपहर में शिविर का विधिवत् उद्घाटन श्री कुलदीपजी रांका (I.A.S.) ने किया। कार्यक्रम में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त श्री सुशीलजी गोदिका, श्री अतुलभाई खारा, श्री अनंतजी पाटनी, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री बिपिनजी शास्त्री, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि महानुभाव मंचासीन थे।

शिविर उद्घाटनकर्ता श्री कुलदीपजी रांका (I.A.S.) ने धर्म और जीवन के उद्देश्य के बारे में अपने विचार व्यक्त किये एवं जन्म-मरण से रहित होने की भावना व्यक्त की। इसके पश्चात् श्री सुशीलजी गोदिका ने ग्रंथ भेंटकर श्री कुलदीपजी रांका का सम्मान किया।

इस अवसर पर जाना संयोजक श्री अतुलभाई खारा ने जाना - जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) का परिचय दिया; श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने टोडरमल स्मारक ट्रस्ट व टोडरमल महाविद्यालय का परिचय दिया। इसके पश्चात् सभी आगन्तुक अतिथियों का तिलक लगाकर, श्रीफल भेंटकर व पगड़ी पहनाकर अभिनन्दन किया गया।

सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

इस शिविर में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

इस शिविर में अमेरिका, यू.ए.ई. आदि देशों से लगभग 55 साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। विशेष कार्यक्रमों के अन्तर्गत जयपुर के मंदिरों, पदमपुरा, चूलगिरि, अजमेर, नारेली, सोनीजी की नसियां आदि आस-पास के तीर्थों की यात्राएं हुई; प्रसिद्ध भजन गायक डॉ. गौरव सौगानी जयपुर द्वारा विशेष भजन संध्या, महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा ज्ञान गोष्ठी आदि कार्यक्रम भी हुये। •

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित गोष्ठियों के क्रम में दिनांक 31 दिसम्बर को **'जैन वाङ्मय का शिरमौर : समयसार'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अतुलभाई खारा अमेरिका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर व पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा उपस्थित थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रतीक जैन विदिशा व विनय जैन मुम्बई ने प्रथम एवं अनुभव जैन खनियांधाना ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। गोष्ठी का मंगलाचरण रजत जैन कापरेन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के नयन जैन बरायठा व पीयूष जैन टडा ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया। ●

शिलान्यास संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ दादाबाड़ी स्थित सन्मति संस्कार संस्थान के नवीन भवन निर्माण का शिलान्यास दिनांक 14 दिसम्बर को संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। समारोह में मुम्बई, सूरत, सागर, दिल्ली, बीना, रतलाम, दाहोद, बड़ौदरा, भीलवाड़ा, बिजौलिया, बारां, पिड़ावा आदि स्थानों के साधर्मियों तथा कोटा समाज ने तन-मन-धन से सहयोग किया। समारोह में कुल 18 शिलान्यास हुये। शिलान्यास प्रशस्ति का वाचन पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा ने किया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी धवल, पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं संस्थान के बालकों द्वारा करवाये गये। ●

समयसार विद्यानिकेतन के कार्यालय का उद्घाटन

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री वासुपूज्य पंचायती दिगम्बर जैन मंदिर सोडा का कुंआ स्थित आत्मायतन परिसर के नवनिर्मित छात्रावास में दिनांक 6 जनवरी को श्री सम्मेदशिखर मंडल विधानपूर्वक कार्यालय का उद्घाटन किया गया।

ध्वजारोहण सभाध्यक्ष पण्डित सुनीलजी शास्त्री मुरार ने किया। मुख्य अतिथि श्री विजयजी (जनता मशीनरी), मुख्य वक्ता पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर (जीवन शिल्प), मार्गदर्शक श्री आर.डी. जैन (पूर्व महाधिवक्ता) व पण्डित महेशजी ग्वालियर थे।

कार्यालय का उद्घाटन श्री महेन्द्रजी जैन (जैन स्टोन), कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन श्री महेश चंदजी जनकगंज, श्री महेन्द्रजी जैन (अरिहंत पेठा), मंदिर कार्यालय का उद्घाटन श्री सुशीलजी जैन ग्वालियर ने किया। कार्यक्रम का संचालन निर्देशक शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ने किया। विधि-विधान के कार्य पण्डित अमितजी शास्त्री व पण्डित मयंकजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये। ●

शोक समाचार

(1) ललितपुर (उ.प्र.) निवासी ब्र. कैलाशचंदजी अचल की माताजी **श्रीमती शांतिबाईजी** का दिनांक 13 दिसम्बर को 90 वर्ष की आयु में मन्दिर जाते समय शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन 5 घंटे स्वाध्याय करती थीं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1101/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) जबलपुर (म.प्र.) निवासी श्रीमती भूरीबाई धर्मपत्नी स्व. फूलचंदजी जैन का दि. 12 जनवरी को 88 आयु में शांतपरिणामों से देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली की माताजी थीं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 5000/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) ललितपुर (उ.प्र.) निवासी श्री अभयकुमारजी टडैया की धर्मपत्नी **श्रीमती चंदा टडैया** का 71 वर्ष की आयु में दिनांक 24 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अनेकों बार शिविरों में उपस्थित होकर तत्त्वज्ञान का लाभ लेती थीं।

(4) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती चमेलीदेवी सौगानी का दिनांक 20 दिसम्बर को 78 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(5) भोपाल (म.प्र.) निवासी श्री सनतकुमारजी जैन का दिनांक 9 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप भोपाल मुमुक्षु मण्डल सक्रिय सदस्य थे, तत्त्वप्रचार की गतिविधियों में सक्रिय रहते थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

(6) महू-इन्दौर (म.प्र.) निवासी श्रीमती कंचनबाई धर्मपत्नी श्री अमरचंदजी जैन (चवरे) का दिनांक 17 दिसम्बर को 76 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अनेक ग्रंथों का स्वाध्याय अत्यंत रुचिपूर्वक करते थे। आपकी स्मृति में वीतराग विज्ञान हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

श्री अष्टपाहुड विधान संपन्न

कलकत्ता : यहाँ पोद्दपुकर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर के 13वें स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 27 दिसम्बर 2018 से 1 जनवरी 2019 तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री अष्टपाहुड विधान आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रात:काल ब्र. सुनीलजी शिवपुरी द्वारा प्रवचनों एवं रात्रि में प्रथमानुयोग की कथाओं का लाभ मिला। कार्यक्रम के ध्वजारोहणकर्ता एवं विधानकर्ता श्री चक्रेशजी अशोकजी सुशीलजी बजाज परिवार कोलकाता थे।

पूजन-विधान के कार्य पण्डित अनिलजी धवल भोपाल द्वारा हुये।

भीलवाड़ा में वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री सीमंधर जिनालय कांवाखेड़ा शास्त्री नगर का छठा वार्षिकोत्सव दिनांक 10 से 13 जनवरी को सानन्द संपन्न हुआ, जिसमें वृहद् द्रव्यसंग्रह मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा कर्म सिद्धांत विषय पर दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का भी आयोजन हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए श्री नरेशकुमार प्रदीपकुमारजी लुहाड़िया द्वारा श्रीजी को शोभायात्रा के साथ मंदिर से कार्यक्रम स्थल श्री कुन्दकुन्द कहान संस्कार भवन में ले जाया गया। तत्पश्चात् ध्वजारोहण श्री जीवन सिंहजी हेमंतजी छाजेड़ परिवार द्वारा किया गया। प्रवचन हॉल का उद्घाटन श्री पारसजी निरुपमाजी लुहाड़िया परिवार द्वारा एवं पाण्डाल का उद्घाटन श्री संदीपजी राहुलजी छाबड़ा परिवार द्वारा हुआ। मंडल विधान का उद्घाटन डॉ. सी.पी. जैन-डॉ. सुमिता जैन परिवार द्वारा किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर द्वारा संपन्न हुये। सभी कार्यक्रम स्थानीय विद्वान श्री अरविन्दजी जैन व श्री अशोकजी सेठी के सान्निध्य में पूर्ण हुए। **– सुखमाल चौधरी**

रत्नत्रय मण्डल विधान संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ माधवगंज स्थित श्री सीमंधर आगम जिनालय में दिनांक 30 दिसम्बर 2018 से 2 जनवरी 2019 तक श्री रत्नत्रय मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। पण्डित जवाहरलालजी की पुण्यतिथि में आयोजित इस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्यरत्न' द्वारा दोनों समय **'सप्तभयों से रहित होने का उपाय : तत्त्वार्थ चिंतन'** विषय पर व्याख्यान हुये। प्रात:काल आयोजित विधान में स्थानीय विद्वानों का सहयोग रहा। **– चिन्मय बड़कुल (मंत्री-अ.भा.जैन युवा फैडरेशन)**

पार्श्वनाथ विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ रामगढ मोड़ स्थित स्योजी गोधा की नसिया में श्री दिगम्बर जैन राज. लमेचुं सभा द्वारा आयोजित लमेचुं समाज का नववर्ष स्नेह मिलन समारोह के अन्तर्गत दि. 6 जनवरी को श्री पार्श्वनाथ विधान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा ने की। पूजन-विधान के कार्य पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री द्वारा हुये।

छपते छपते...

ग्वालियर (म.प्र.) एवं हेरले-कोल्हापुर (महा.) में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव दि. 16 से 21 जनवरी तक सानन्द संपन्न हुए, इनके समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में वेदी शुद्धि का कार्यक्रम संपन्न

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2018-20*

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में 3 BHK की बिल्डिंग पूर्ण

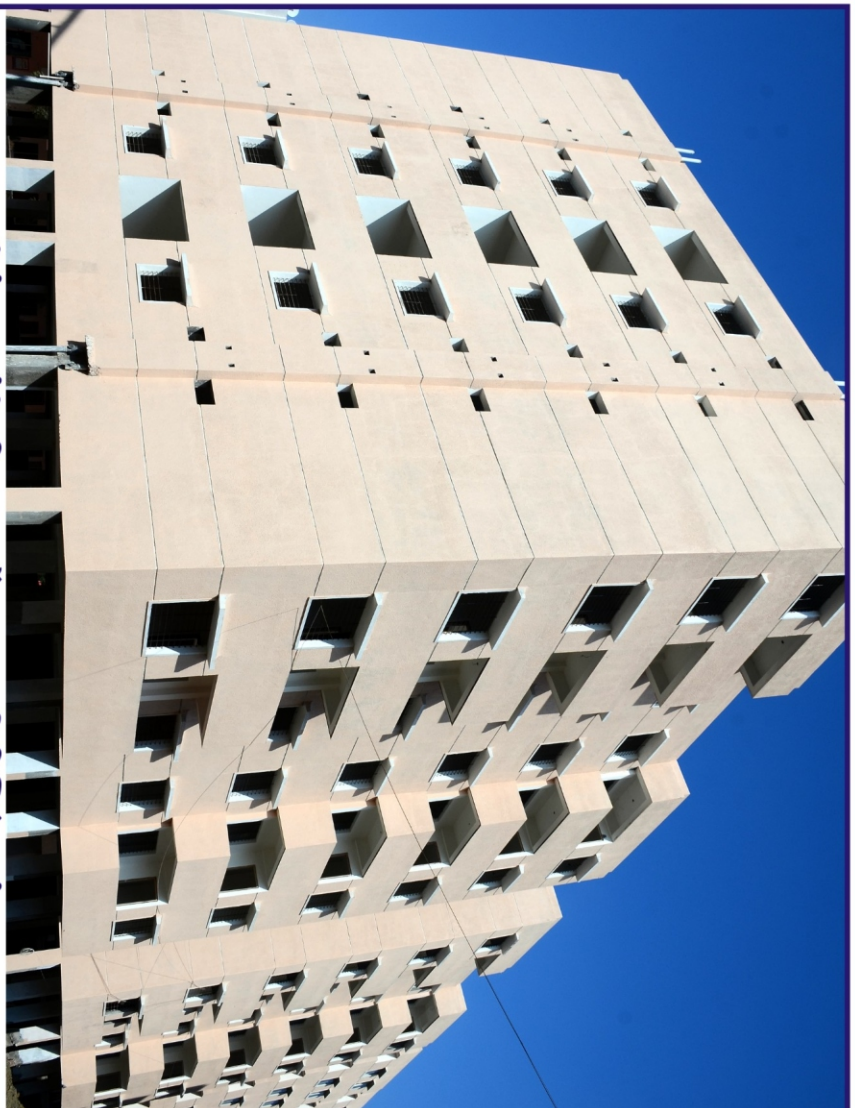

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**